परिचय

इब्रानी कविता

पुराने नियम का एक तिहाई से अधिक भाग कविता के रूप में लिखा गया है। भजन संहिता, नीतिवचन, सभोपदेशक, श्रेष्ठगीत और विलापगीत पूरे के पूरे इब्रानी कविता में लिखे गए। अध्याय 1 व 2, तथा 42:7–17 में वर्णनात्मक तथ्य के अपवाद के साथ अय्यूब की पुस्तक का अधिकतर भाग कविता में है। पंचग्रंथ, ऐतिहासिक पुस्तकें, भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों में इब्रानी कविता है। यशायाह की पुस्तक लगभग सारी की सारी ही कविता रूप में लिखी गई है। यिर्मयाह की पुस्तक को बराबर गद्य और पद्य (कविता) में विभाजित किया गया है।

बहुत से लेखक कविता को साहित्य में बाद में जोड़ा गया मानते हैं। परन्तु 1929–1933 की रस समरा की फ्रांसीसी खुदाई में युगेरी कविता से यह प्रमाणित हो गया कि सामी कविता काफी पुरानी है। युगेरी या रस शमरा जैसा कि इसे जाना जाता था, 1200 ई.पू. में नष्ट हुआ एक कनानी नगर था। खुदाइयों से शाही कब्रों, दो बड़े मन्दिरों और कई पुरावशेषों का पता चला, जो इस नगर को मिस्र, मेसोपोटामिया तथा हित्ती लोगों के साथ जोड़ता है। सबसे महत्वपूर्ण खोज पूर्व में अज्ञात अक्षरात्मक तूफ़ान लिपि में लिखी गई सामी भाषा सहित जिसे अब ''युगेरी'' कहा जाता है, निकट पूर्वी भाषाओं में स्फ़ान लिपि की फटियों वाले पुस्तकालय की खोज है।

गत दो शताब्दियों में हुई मिस्र और मेसोपोटामिया की प्राचीन भाषा के प्राचीन निकट पूर्व के लोगों की कविता के बारे में ज्ञान में काफ़ी बढ़ोतरी हुई है। आज, सुमेरियों, अकादियों, बेबिलोनियों, अश्शूरियों, मिस्त्रियों तथा हित्तियों की कविता के अनुवाद पढ़े जा सकते है। इनमें से अधिकतर अनुवाद *द कांटेक्स्ट ऑफ़ स्क्रिप्चर ऐंड एंनसिएंट नीयर ईस्टर्न टेक्स्ट्स रिलेटिंग टू द न्यू टैस्टामैंट* में मिल सकते हैं।[1]

इब्रानी कविता की समझ में बढ़ोतरी 1753 में रॉबर्ट लोथ के औपचारिक सम्बोधनों से हुई जो उस समय दिए गए थे, जब उनको इंग्लैंड की ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में प्रोफैसर के पद पर नियुक्त किया गया था। उन्होंने इब्रानी कविता की बनावट की विशेषताओं के अध्ययन के सार को मुख्य रूप में दोष की बात माना जिसमें आवाज और आकार का तालमेल नहीं था। विचारों का संतुलन छंदों पर भारी था। उन्होंने कहा कि विचारों की संवादिता (समानार्थी, विरोधात्मक और समरूपता) से इब्रानी कविता का प्रभाव बढ़ गया।[2]

बहुत से विद्वानों ने लोथ के उद्घाटनी कार्य के आधार पर ही रचना का कार्य किया है। 1947 में टी. एच. रोबिन्सन ने *द पोयटरी ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट* लिखी।[3] उन्होंने माना कि इब्रानी कविता में शब्दों का उच्चारण, उनका चयन और क्रम महत्वपूर्ण हैं। परन्तु विलक्षण इसे आवाज नहीं, बल्कि इसके शब्द रूप बनाते हैं। इब्रानी आयत में महत्वपूर्ण इकाई विचार की है। उन्होंने कहा कि ''हर आयत में कम से कम, 'सदस्य' होने आवश्यक है; जिसमें दूसरा, कमोबेश पहले में उठाई गई उम्मीद को पूरी तरह से पूरा करता है।''[4]

बुद्धि का साहित्य

कम से कम छठी शताब्दी ई.पू. आने तक इस्राएलियों के आध्यात्मिक अगुओं के बीच एक विशेष वर्ग था जिसे ''बुद्धिजीवी'' नाम दिया जाता था। कम से कम लोगों की नज़र में, कौम के धाम्रिक स्वरूप को बनाए रखने ज़िम्मेदारी उन्हीं की थी। यिर्मयाह के विरुद्ध षड्यन्त्र रचते हुए यरूशलेम के लोगों ने कहा था:

> चलो, यिर्मयाह के विरुद्ध युक्ति करें, क्योंकि न याजक से व्यवस्था, न ज्ञानी से सम्मति, न भविष्यद्वक्ता से वचन दूर होंगे। आओ, हम उसकी कोई बात पकड़कर उसका नाश कराएं (मूल में, उसको जीभ मारें) और फिर उसकी किसी बात पर ध्यान न दें (यिर्मयाह 18:18)।

यिर्मयाह 18:18 में ''ज्ञानी'' या ''बुद्धिमान'' के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले इब्रानी शब्द (*chakam, चाकाम*) का पुराने नियम में व्यापक इस्तेमाल मिलता है। निर्गमन 31:6 में इसका इस्तेमाल कारीगरों के तकनीकी हुनर के अर्थ में किया गया है (देखें निर्गमन 35:10; 36:1, 2)। कई जगह इसका इस्तेमाल प्रशासन की समझ रखने वालों यानी सलाहकारों के लिए हुआ है (उत्पत्ति 41:33; 2 इतिहास 25:16; यशायाह 29:13, 14; यिर्मयाह 50:35)। *चाकाम* का इस्तेमाल ज्योतिषियों, पण्डितों और जादूगरों इत्यादि के एक विशेष वर्ग के लिए भी किया जा सकता है (उत्पत्ति 41:8; निर्गमन 7:11)। अय्यूब, नीतिवचन और सभोपदेशक में इसका इस्तेमाल शिक्षकों और ज्ञानियों के लिए नैतिक और धार्मिक अर्थ में किया गया है।

यह पुस्तक ज्ञान पाने (जैसे सलाहकार और सरकारी सलाहकार पाते हैं) और ''ज्ञान जो ऊपर से है'' (याकूब 1:5; 3:13-18) में स्पष्ट अंतर बताती है। यह ईश्वरीय ज्ञान: (1) परमेश्वर के स्वभाव पर आधारित ज्ञान जो थियोक्रेटिक यानी धर्म शासित है; (2) आत्मिक (नीतिवचन 1:7); (3) परमेश्वर की प्रेरणा से (2 तीमुथियुस 3:16, 17); और (4) बहुत ही व्यावहारिक है।

अय्यूब की पुस्तक

अय्यूब की पुस्तक को व्यापक रूप में इसकी विलक्षणता के लिए जाना जाता है। यह अब तक के साहित्य की श्रेष्ठतम पुस्तकों में से एक है जिसमें गद्य (प्रोज़), पद्य (कविता), कथा और वार्तालाप का निराला संगम है। पुस्तक को आधुनिक कविता के साथ काव्य (गीत, महाकाव्य, नाटकीय इत्यादि) वर्गीकरण किए जाने को चुनौती देता है। इसकी कविता उत्तम शैली के साथ साथ कठिन भी है। इसकी विषयवस्तु तय कर पाना कठिन है। सदियों से मानव जाति के लिए अय्यूब की पुस्तक आकर्षण का केन्द्र रही है। मेमोनाइड्स[5] से मैक्लेश[6] सब ने इसके संदेश का चिंतन किया है। यह रॉबर्ट फ्रॉस्ट जैसे अन्य बड़े कवियों के लिए प्रेरणा रही है। आइए यहोवा की ओर से अपने सेवक अय्यूब पर ध्यान देने के निमन्त्रण को स्वीकार करें (1:8)।

बाइबल से बाहरी तुलनाएं

सोच विचार रखने वाले लोगों को हर जगह ही दु:ख और क्लेश का सामना करना पड़ता

है। बुद्धिजीवियों ने मानवीय क्लेश और परमेश्वर के साथ मनुष्य के सम्बन्ध से सम्बन्धित प्रश्नों पर चिंतन किया है। पुस्तक के संदेश या विषय-वस्तु की बाइबल से बाहरी तुलनाएं हैं। भारत के हरीशचन्द्र की कहानी देवताओं के एक धर्मी जन की तलाश और उसके बाद उसकी सम्पत्ति की परीक्षा के बारे में है। ''द एलक्विंट पीज़ेंट'' (अर्थात चतुर किसान) नामक कथा में अर्धकाव्य के नौ वार्तालाप हैं जिनमें बताया गया है कि किस प्रकार से एक दलित व्यक्ति को अंत में हाकिम से न्याय मिल जाता है।[7] बेबिलोन की चार पुस्तकें हैं जो अन्यायपूर्ण ढंग से दुःख आने के विषय ''डायलॉग बिटवीन ए मैन ऐंड हिज़ गॉड'' (मनुष्य और उसके परमेश्वर के बीच बातचीत), ''द पोयम ऑफ़ द राइचियस सफरर'' (धर्मी क्लेश पाने वाले की कविता), ''द बेबिलोनियन थियोडिसी'' (बेबिलोन का ईश्वरीय न्याय), और ''द डायलॉग ऑफ़ पैसिमिज़्म'' (निराशावाद का वार्तालाप) का पता लगाती हैं।[8] तुलनाएं तय करते समय इस बात को ध्यान में रखना आवश्यक होता है कि इनका महत्व भी असमानताओं जितना ही होता है, बल्कि कई बार तो उनसे भी कहीं बढ़कर होता है। ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता कि अय्यूब की पुस्तक के लेखक ने इन अन्य पुस्तकों से लेकर लिखा हो। यह पक्का है कि इस श्रेष्ठ पुस्तक की कोई बराबरी नहीं है।

बाइबली तुलनाएं

बाइबल में ऐसे बहुत से लोगों का इतिहास है जिन्होंने वह दुःख सहा जिसके वे हक्कदार नहीं थे। इस सूची में सबसे ऊपर नाम हाबिल का आता है (उत्पत्ति 4:4, 7), जिसके बाद यूसुफ का नाम आता है (उत्पत्ति 39:1-23), और उसमें यिर्मयाह, दानिय्येल और सबसे बढ़कर हमारे प्रभु यीशु मसीह का उदाहरण मिलता है। विषय अनन्तकाल तक आधुनिक है।

पुस्तक के लिखे जाने का समय और लेखक

अय्यूब की पुस्तक के लेखन की कई और अलग-अलग तिथियां सुझाई जाती हैं। तिथि को तय करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली कसौटी पुस्तक में ही से होनी आवश्यक है: इसमें दिए गए लोगों की ऐतिहासिक परिस्थिति, लेखन शैली, और अन्य बातें। अय्यूब और उसके मित्र यहूदी नहीं थे इस कारण तिथि को तय करने के लिए यह तथ्य कि बलिदान पिता के द्वारा भेंट किए जाते थे, महत्वपूर्ण हो भी सकता है और नहीं भी। कुछ विद्वानों का मत है कि ये घटनाएं इससे पहले घटित हुईं, परन्तु लिखी बहुत देर के बाद गईं। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि यह पुस्तक पुरखाओं के काल के दौरान लिखी गई परन्तु इस बात पर हठधर्मी नहीं हुआ जा सकता। पुस्तक के लेखक की पहचान भी संदिग्ध है।

ऐतिहासिकता

कुछ आधुनिक विद्वानों ने योबान की सामग्रियों के आंशिक या पूर्ण ऐतिहासिक मूल्य पर सवाल उठाया।[9] वैसे ही योग्य विद्वानों ने अय्यूब की पुस्तक की ऐतिहासिकता और एकरूपता पर बहस की है।[10] पुराने नियम के यहेजकेल (यहेजकेल 14:14) और नये नियम के याकूब (याकूब 5:11) दोनों से अय्यूब के सचमुच में एक वास्तविक व्यक्ति होने की पुष्टि ईश्वरीय

प्रेरणा से हो चुकी है। पुस्तक में दिखाए गए पात्रों की ऐतिहासिकता का इनकार किए बिना विचार किए गए विषयों के कविता होने को माना जा सकता है।

अय्यूब की पुस्तक में विषय

बामर एच. कैली ने उन विषयों की अच्छी सूची दी है, जो पुस्तक में प्रमुखता से पाए जाते हैं।[11]

1. उदासीन भलाई जैसी कोई बात है।
2. प्रतिफलों और दण्ड के नियम का इनकार।
3. परमेश्वर के प्रत्यक्ष ज्ञान पर ज़ोर दिया गया है।
4. भविष्य के जीवन की सम्भावना दी गई है।
5. इसमें मनुष्य के पाप की गहरी समझ है।
6. अय्यूब को विश्वास का नायक दिखाया गया है।
7. परमेश्वर के अनुग्रह की सही टिप्पणी की गई है।

पुस्तक के पाठकों को यह सम्भावना दी जाती है कि पर्दा उठने तक अय्यूब पर अभी कष्ट आया नहीं था और हमें स्वर्गीय महासभा की मीटिंग में भाग लेने की अनुमति दी जाती है। अय्यूब को शैतान के द्वारा परखा गया था, परन्तु परमेश्वर के उद्देश्यों के अनुसार, उसे उसकी सहनशक्ति के बाहर परखे जाने की अनुमति नहीं मिली थी (1 कुरिन्थियों 10:13)।

अय्यूब को इस बात का कोई जवाब नहीं दिया गया कि लोगों के ऊपर कष्ट क्यों आता है। पुस्तक का मुख्य मुद्दा परमेश्वर और मनुष्य के बीच सम्बन्ध का होना है। इस सम्बन्ध को परमेश्वर को ''जानने'' में व्यक्त किया गया है। इब्रानी भाषा में ''जानना'' शब्द का अर्थ सम्बन्ध से है।[12] जब परमेश्वर ने अय्यूब को दर्शन दिया, तब भी अय्यूब को मालूम नहीं था कि उसके ऊपर कष्ट क्यों आया। पर उसे यह मालूम था कि परमेश्वर परवाह करता है। इस ज्ञान से उसे सहने की सामर्थ मिली।

अय्यूब की पुस्तक के पात्र

अय्यूब

परमेश्वर ने अय्यूब के लिए कहा, ''उसके तुल्य खरा और सीधा और मेरा भय माननेवाला और बुराई से दूर रहनेवाला मनुष्य और कोई नहीं है'' (1:8)। जगत के परमेश्वर की ओर से कितनी शानदार बात कही गई! बाइबल के किसी भी पात्र का विवरण इस प्रकार से नहीं किया गया। अय्यूब सचमुच में खरा मनुष्य था।[13]

शैतान

अनुवाद किया गया शब्द शैतान आवश्यक नहीं कि बाइबल में व्यक्तिवाचक नाम हो। इस शब्द के साथ उपपद *(haśśatan, हस्सातान)* मिलता है और इसका सही अनुवाद ''विरोधी'' हो

सकता है। परन्तु यह स्पष्ट लगता है कि "शैतान" को ही यहां दिखाया गया है। जे. वाश वाटस ने शैतान की चार महत्वपूर्ण खूबियां लिखी हैं:

1. वह अच्छे लोगों का विरोधी है। यह उसके नाम से मेल खाता है, जिसका अर्थ है विरोधी।
2. वह [याहवेह] के अधीन है। [याहवेह] की अनुमति के बिना उसके पास कोई सामर्थ नहीं है।
3. उसके पास सीमित शक्ति है। [याहवेह] ने उसकी शक्ति को अपनी इच्छा से मेल खाते ढंगों और समयों में सीमित रखा है।
4. वह परमेश्वर में विश्वास को पराजित नहीं कर सकता। परमेश्वर द्वारा शैतान को अय्यूब को कष्ट देने की अनुमति दिए जाने और उसकी शक्ति की सीमा के कारण को न जानने के बावजूद, अय्यूब के विश्वास ने उसे पराजित कर दिया।[14]

अय्यूब की पत्नी

पुस्तक में अय्यूब की पत्नी का उल्लेख तीन बार हुआ है (2:9; 19:17; 31:10), परन्तु उसका नाम नहीं दिया गया। वह अपने पति से केवल एक बार 2:9 में बात करती है जहां वह अय्यूब से कहती है, "परमेश्वर की निंदा कर, और चाहे मर जाए तो मर जा!" उसे अपराधी ठहराने में जल्दी करने से पहले हमें यह याद रखना आवश्यक है कि उसने भी बड़ी हानि उठाई थी। अपने बच्चों, अपनी सम्पत्ति और अपने पति के स्वास्थ्य के जाने का उस पर गहरा प्रभाव पड़ा था।

एलीपज

अय्यूब के तीनों मित्रों में से सबसे पहले बोलने वाला तेमानी एलीपज है। इससे सम्भवतया यह संकेत मिलता है कि वह सबसे बड़ा था, जैसा कि पूर्वी परम्परा बताती है जिसका एलीहू से संकेत मिलता लगता है (32:6, 7)। तेमान ज्ञान का प्राचीन केन्द्र था (यिर्मयाह 49:7; हबक्कूक 3:3)। एलीपज के नाम का अर्थ है "मेरा परमेश्वर शुद्ध सोना है।" उसका विवरण देते हुए लेखक विनम्रता, शराफत और सहानुभूति के रूप में ऐसी बातों की ओर ध्यान दिलाते हैं।[15] एडगर जोन्स ने उसे उस समूह का "ऐल्डर राजनेता" नाम दिया है।[16] सेमुएल कॉक्स ने लिखा है, "तीनों में बड़ा और सबसे समझदार होने के कारण, एलीपज पहले बोलता है। वे लोगों में पाए जाने वाले सामान्य विश्वास और भावनाओं की सबसे बढ़िया, सबसे अच्छी, और सबसे सुन्दर अभिव्यक्ति देता है।"[17]

ज्ञान के जिन स्रोतों की ओर एलीपज ध्यान दिलाता है वे दोहरे हैं: (1) पहले उसने बीती घटनाओं और अनुभवों के सामान्य ज्ञान की ओर ध्यान दिलाया। उसने अय्यूब को कालांतर में लोगों को तसल्ली देने वाले के रूप में अपनी गतिविधि को याद करने का आग्रह किया। निश्चय ही अय्यूब ने माना कि निर्दोष कभी नष्ट नहीं हुआ था। उसका और अय्यूब का मानना था कि जो व्यक्ति परमेश्वर का भय मानता और अपनी खराई में बना रहता है वह आशीष पाएगा (4:3–7)। (2) दूसरा, एलीपज द्वारा दावा किए जाने वाले ज्ञान का अधिक गहरा और बुनियादी स्रोत है। एक रात उसके साथ एक घटना घटी थी जिसमें मनुष्य के पाप रहित होने की बात उसके मन पर

डाली गई थी। इस ''रहस्यमय'' अनुभव ने उसकी सोच को आकार दिया और उसके भाषणों को कलमबद किया। उसने अपने अनुभव को इन शब्दों में वर्णन किया:

> एक बात चुपके से मेरे पास पहुंचाई गई, और उसकी कुछ भनक मेरे कान में पड़ी। रात के स्वप्नों की चिन्ताओं के बीच जब मनुष्य गहरी निद्रा में रहते हैं, मुझे ऐसी थरथराहट और कंपकंपी लगी कि मेरी सब हड्डियाँ तक हिल उठीं। तब एक आत्मा मेरे सामने से होकर चली; और मेरी देह के रोएँ खड़े हो गए। वह चुपचाप ठहर गई और मैं उसकी आकृति को पहिचान न सका (अय्यूब 4:12-16)।

यह अनुभव जिससे एलीपज की सोच इतनी गहराई से प्रभावित हुई थी, ईश्वरीय प्रकाशन था कि नहीं इस पर यकीनन सवाल उठाया जा सकता है। परन्तु उसका पक्का मानना था कि यह ईश्वरीय प्रकाशन था और इसने उसकी थियोलॉजी को प्रभावित किया।

बिलदद

अय्यूब के साथ झगड़े में शामिल होने वाला उसका दूसरा मित्र शूही बिलदद है। बिलदद के सम्बन्ध में जो भी जानकारी है उसका अनुमान पुस्तक में से ही लगाया जाना आवश्यक है। उसके गृहनगर शूह का पक्का पता नहीं है कि कहां था।

बिलदद की धर्मशास्त्री मान्यताएं आवश्यक रूप में एलीपज वाली मान्यताओं वाली ही हैं। परन्तु अधिकार के प्रति उसकी अपील का आधार थोड़ा अलग है। उसकी अपील पुरखाओं की समझ पर थी जिसने उसे ''परम्परावादी'' नाम दिया।

जेम्स स्ट्राहन ने बिलदद के सम्बन्ध में यह दिलचस्प अवलोकन किया है:

> यदि बिलदद न कोई पैगम्बर और न कोई मूल विचारक है, यदि लिखे जाने के लिए उसका अपना कोई गम्भीर प्रकाशन नहीं है और अपने समय की शिक्षा का मामूली सा विचार है, तो वह कम से कम विद्वान होने का दावा कर सकता है जो प्राचीन काल के लोगों की बुद्धि के प्रति अथाह सम्मान के साथ देखता है। उसके लिए ज्ञान परम्पराओं में ही मिलता है और उसका दिल दिमाग कहावतों और उद्धरणों में ही निहित है। अय्यूब की आवेशपूर्ण बातचीत उसके ऊपर तेज आंधी की तरह गुजर गई जो उसके मन पर एक दु:खदायी प्रभाव छोड़ गई कि परमेश्वर की प्रामाणिकता पर संदेह किया गया है और वह इसी दुष्टता की स्वयं बात करता है।[18]

बिलदद ने अय्यूब की अपने जीवन में पाई गई समझ को युगों से इकट्ठा की गई समझ के साथ मिलाया:

> पिछली पीढ़ी के लोगों से तो पूछ, और जो कुछ उनके पुरखाओं ने जांच पड़ताल की है उस पर ध्यान दे; क्योंकि हम तो कल ही के हैं, और कुछ नहीं जानते; और पृथ्वी पर हमारे दिन छाया के समान बीतते जाते हैं (अय्यूब 8:8, 9)।

जॉर्ज बुचनन ग्रे का मानना था कि मनुष्यजाति के सम्पूर्ण इतिहास को एक ही पीढ़ी *(dor, डोर)*

के रूप में देखा जाता है कि 8:8 में इब्रानी वाक्यांश ''पिछली पीढ़ी'' की बात करता है।[19]

इन आयतों पर सेमुएल टेरियन की टिप्पणी शिक्षाप्रद है:

> प्राचीन ज्ञानियों की परम्परा की आवश्यकता उस व्यक्ति को है जिसका जीवन इतना छोटा है कि वह अनुभव पाने के लिए पर्याप्त नहीं है। बिलदद एलीपज से अधिक उपदेशात्मक हठधर्मी है। एलीपज अपने ही प्रकार के प्रकाशन की ओर ध्यान दिलाता है ... इसके विपरीत बिलदद धर्म का शिक्षक है और वह धर्मसार को जानता है और इतना ही काफ़ी है। उसकी शिक्षा का स्रोत वर्तमान परमेश्वर के साथ कोई निजी सम्पर्क नहीं बल्कि विद्वतापूर्वक पढ़ाई और पुरातात्विक संग्रह है। वह यह समझे बिना कि वर्तमान के लिए उन फार्मूलों पर फिर से विचार करना आवश्यक है जो अब काफ़ी नहीं रहे, अतीत की ओर आकर्षित ''पुरा परम्परा'' किस्म का धर्मशास्त्री है।[20]

सोपर

सोपर तीनों मित्रों में से बोलने वाला अंतिम था। उसके बारे में जो भी ज्ञात है उसका अनुमान अय्यूब की पुस्तक में से लगाया जाना आवश्यक है। सोपर के केवल दो भाषण दर्ज हैं, उसका जन्म स्थान नामा या शायद नामे था। नामे नाम का एक नगर यहूदा के शपाला जिले में था (यहोशू 15:41)।

स्ट्राहन ने सोपर को ''स्पष्ट परम्परागत हठधर्मी''[21] नाम दिया है जिसे बाइबल के अन्य विद्वानों द्वारा स्वीकार किया जाता है।[22] हठधर्मी धर्मशास्त्री के रूप में सोपर का वर्णन शायद इस अर्थ में है कि ''वह उस जानकारी को जो उसके पास है 'अधिकार' के साथ बताता है। उसे किसी अन्य स्रोत से न तो समर्थन की आवश्यकता है और न ही प्रामाणिकता की।''[23]

सोपर को ''बहुत सी बातें'' कहकर जिन्हें वह गैर ज़िम्मेदार मानता था (11:2-4) बदनाम किया गया। वह चाहता था कि परमेश्वर स्वयं अय्यूब की अविवेकी बातों का उत्तर दे, क्योंकि उसने उत्तर नहीं दिया, इस कारण सोपर ने दे दिया! अय्यूब पर पाप का दोष लगाने वाला वह सबसे पहला था (11:6)।

एलीहू

अय्यूब की पुस्तक के अध्याय 32 में अचानक एक नया वक्ता बूजी बारकेल का पुत्र एलीहू आता है। तीनों अन्य मित्रों की तरह जो कुछ उसके विषय में ज्ञात है उसका अनुमान उन अध्यायों से लगाया जाना आवश्यक है जिनमें उसके भाषण है (अध्याय 32-37)। स्पष्टतया वह अब्राहम के भाई नाहोर की एक संतान था (उत्पत्ति 22:20, 21)। उसका जन्म स्थान बूज सम्भवतया तेमा का इलाका ही था (यिर्मयाह 25:23), चाहे पक्के तौर पर नहीं बताया जा सकता कि वह इलाका कहां है।

अय्यूब की पुस्तक में एलीहू के भाषणों की प्रामाणिकता को 19वीं सदी में पैदा होने वाली आलोचना से पहले आम तौर पर माना जाता था। 1803-1804 में उनकी यथार्थता पर सबसे पहले सवाल उठाने वालों में जे. ई. इकौर्न और एम. एच. स्टहलमन ही लगते हैं। 19वीं और 20वीं सदियों में बहुत से विद्वानों ने उन्हीं की राह पकड़ी।[24] परन्तु उनके विचार को उन लोगों

ने नहीं माना, जो एलीहू के भाषणों की प्रामाणिकता का तर्क देते हैं।[25] यह भाषण अय्यूब की पुस्तक में अत्यावश्यक योगदान हैं।[26]

एलीहू का योगदान परमेश्वर के मनुष्यजाति को अपनी इच्छा बताने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले विभिन्न माध्यमों पर दिए जाने वाले उसके ज़ोर में मिलता है। स्वप्न और दर्शन, कष्ट और स्वर्गदूतों की मध्यस्थता, और सृष्टि के सब अजूबे सर्वशक्तिमान परमेश्वर का आदर और उसके गुणगान करने का कारण बन सकते हैं।

टेरियन ने एलीहू के योगदान का उचित आकलन किया है:

> ... एलीहू के उपदेशों में ... एकदम से बवंडर में से निकलने वाली आवाज को सुनने के लिए नकारात्मक और सकारात्मक तैयारी मिलती है (38:1–42:6)। अलंकारिक रूप में उनसे नायक की निकासी की शपथ और प्रभु के हस्तक्षेप का नाटकीय असंमजस उत्पन्न होता है। मनोवैज्ञानिक रूप में वे मानवीय कष्ट और अलगावपन की गहराई का सामना करने की मनुष्य की अयोग्यता को दिखाते हैं। धर्मशास्त्रीय रूप में वे नायक को परमेश्वर का तुरन्त सामना करने के लिए तैयार करते हैं। एलीहू अय्यूब को पाप के धर्मशास्त्रीय आयामों को समझाने में सफ़ल नहीं होता: इस उद्देश्य को बवंडर में से आने वाली आवाज ही पूरा कर सकती है। परन्तु एलीहू अय्यूब की सोच को अहंकार के उस क्षेत्र में पहुंचाने में सफल हो जाता है जिसके केन्द्र में महिमामय परमेश्वर राज करता है। इस अर्थ में एलीहू के उपदेश परम पवित्र की दहलीज से मिलाए जाने के योग्य हैं।[27]

परमेश्वर

परमेश्वर की ओर से अय्यूब की दिली तमन्ना पूरी की गई, पर उसने बिल्कुल ही अप्रत्याशित ढंग से बात की। अय्यूब को एक के बाद एक जल्दी-जल्दी से व्यंग्यपूर्ण हवाले देते हुए अपना ज्ञान दिखाने की चुनौती दी गई। अध्याय 38 से 41 में परमेश्वर के तीन संदेश अय्यूब के संक्षिप्त उत्तर के साथ उन्हें अलग करते हुए दर्ज किए गए हैं (40:3–5)। इन्हीं भाषणों में अय्यूब की पुस्तक अपने चरम पर पहुंचती है।

रूपरेखा

I. भूमिका (1:1–2:13)
- क. अय्यूब पर दु:खों का घेरा (1:1–22)
- ख. अय्यूब का अत्यधिक कष्ट और उसके तीन मित्र (2:1–13)

II. अय्यूब का विलाप (3:1–26)

III. भाषणों का पहला दौर (4:1–14:22)
- क. एलीपज का पहला भाषण (4:1–5:27)
- ख. अय्यूब का उत्तर (6:1–7:21)
- ग. बिलदद का पहला भाषण (8:1–22)
- घ. अय्यूब का उत्तर (9:1–10:22)
- ङ. सोपर का पहला भाषण (11:1–20)

च. अय्यूब का उत्तर (12:1–14:22)

IV. भाषणों का दूसरा दौर (15:1–21:34)

क. एलीपज का दूसरा भाषण (15:1–35)

ख. अय्यूब का उत्तर (16:1–17:16)

ग. बिलदद का दूसरा भाषण (18:1–21)

घ. अय्यूब का उत्तर (19:1–29)

ङ. सोपर का दूसरा भाषण (20:1–29)

च. अय्यूब का उत्तर (21:1–34)

V. भाषणों का तीसरा दौर (22:1–27:23)

क. एलीपज का तीसरा भाषण (22:1–30)

ख. अय्यूब का उत्तर (23:1–24:25)

ग. बिलदद का तीसरा भाषण (25:1–6)

घ. अय्यूब का उत्तर (26:1–27:23)

VI. अय्यूब के अंतिम भाषण (28:1–31:40)

VII. लीहू के भाषण (32:1–37:24)

VIII. बवण्डर के बीच में से अय्यूब को परमेश्वर का उत्तर (38:1–41:34)

क. परमेश्वर का पहला संदेश (38:1–40:2)

ख. अय्यूब का उत्तर (40:3–5)

ग. परमेश्वर का दूसरा संदेश (40:6–41:34)

IX. उपसंहार (42:1–17)

क. अय्यूब का अंगीकार (42:1–6)

ख. तीनों मित्रों को परमेश्वर की डांट (42:7–9)

ग. परमेश्वर का अय्यूब के जीवन को फिर से खुशहाल करना और अय्यूब को बच्चों की आशीष देना (42:10–17)

टिप्पणियां

[1]विलियम डब्ल्यू. हैलो, सम्पा. *द कॉंटेक्सट ऑफ़ सक्रिप्चर,* 3 अंक (बोस्टन: ब्रिल, 2003) (पुस्तक में आगे इसे *COS* लिखा गया है); और जेम्स बी. प्रिचर्ड, सम्पा., *एंनसियंट नीयर ईस्टर्न टेक्स्ट्स रिलेटिंग टू द ओल्ड टैस्टामैंट,* 3रा संस्क. (प्रिंसटन, न्यू जरसी, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रैस, 1969) (पुस्तक में आगे इसे *ANET* लिखा गया है)। [2]देखें रॉबर्ट लोअथ, *लैक्चर्स ऑन द सेक्रड पोयटरी ऑफ़ द हिब्रूस,* अनु. जी. ग्रेगरी (एंडोवर: क्रॉकर ऐंड ब्रूस्टर, 1829)। यह पुस्तक मूल रूप में 1753 में लातीनी भाषा में प्रकाशित हुई थी। लोअथ की यशायाह*: ए न्यू ट्रांसलेशन विद ए प्रिलिमिनरी डिस्सर्टेशन* (बोस्टन: विलियम हिलार्ड, 1834), ix भी देखें। [3]टी. एच. रोबिन्सन, *द पोयटरी ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट* (लंदन: डकवर्थ, 1947)। [4]वहीं, 21. [5]मोसस मेमोनाइड्स, *ए गाइड फॉर द पर्प्लेक्सड,* अनु. एम. फ्रीडलैंडर, 2रा संशो. संस्क. (न्यू यॉर्क: डोवर पब्लिकेशंस, Inc., 1956), 296–303. मेमोनाइड्स का जन्म 1135 ई. में हुआ। पहली सदी के बाद से वह यहूदियों के सबसे बड़े विचारकों में से एक था। उसने इस पुस्तक में कई दार्शनिक प्रश्नों पर चर्चा की। [6]आरकिल्ड मैकलिश, *जे.बी.: ए प्ले इन वर्स* (बोस्टन: ह्यूटन मिफ्लिन कंपनी, 1956–1958)। [7]*COS*, 1:98–104 में ''द एलक्विंट पेज़ेंट,'' अनु. निलि शूपक।

पुरखाओं के समय में प्राचीन निकट पूर्व
हित्ती साम्राज्य
(हत्ती)
हिद्देकेल
नामक नदी
कैस्पियन
सागर
मितानी
हारान
नीनवे
अशशूर
अराम
(सीरिया)
फरात नदी
कप्तोर
(क्रेते)
कित्ती
(कुप्रुस)
महासमुद्र
(भूमध्य सागर)
सैदा
दमिश्क
सूर
कनान
यरूशलेम
मादे
बेबिलोनिया
बेबिलोन
एलाम
मिस्री
साम्राज्य
नील नदी
ऊर
अरब
लाल समुद्र
फरात
की खाड़ी

[8]*COS*, 1:485 में ''डायलॉग बिटविन ए मैन ऐंड हिज़ गॉड,'' अनु. बेंजामिन आर. फोस्टर; *COS*, 1:486–92 में ''द पोयम ऑफ़ द राइचियस सफरर'' अनु. बेंजामिन आर. फोस्टर; *COS*, 1:492–95 में ''द बेबिलोनियन थियोडिसी,'' अनु. बेंजामिन आर फोस्टर; और *COS*, 1:495–96 में ''द डायलॉग ऑफ़ पैसमिज़्म,'' अनु. एल्डेयर लिविंगस्टोन। [9]नॉर्मन के. गॉटवल्ड, *ए लाइट टू नेशंसज़: ऐन इंट्रोडक्शन टू द ओल्ड टैस्टामैंट* (न्यू यॉर्क: हार्पर और रो पब्लिशर्स, 1959), 477; बर्नहार्ड डब्ल्यू. एंडरसन, *अंडरस्टैंडिंग द ओल्ड टैस्टामैंट*, 4था संस्क. (सैडल रिवर, न्यू जर्सी: प्रेंटिस हॉल, Inc., 1998), 531; और ओटो ईसेफेल्ड, *द ओल्ड टैस्टामैंट: ऐन इंट्रोडक्शन*, अनु. पीटर आर. एकरॉयड (न्यू यॉर्क: हार्पर ऐंड रो, पब्लिशर्स, 1965), 462–66. [10]होमेर हेली, *ए कॉमैंट्री ऑन अय्यूब* (पृष्ठ नहीं: रिलिजियस सप्लाई, Inc., 1994), 19, 22–24; ग्लीसन एल. आर्चर, जूनियर, *ए सर्वे ऑफ़ ओल्ड टैस्टामैंट इंट्रोडक्शन*, संशो. व विस्तार (शिकागो: मूडी प्रैस, 2007), 429–36; और आर. के. हेरिसन, *इंट्रोडक्शन टू द ओल्ड टैस्टामैंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1969), 1031, 1036–38.

[11]बामर एच. केली, *एज्रा–अय्यूब*, द लेमैन'स बाइबल कॉमैंट्री, अंक 8 (लंदन: एससीएम प्रैस, लिमिटेड, 1962), 56–57। [12]देखें रॉबर्ट डोनल्ड शैकलफोर्ड, *द कांसेप्ट ऑफ़ नॉलेज इन द बुक ऑफ़ अय्यूब* (Th.D. डिसर्टेशन, न्यू ऑरलियन्स बैपटिस्ट थियोलॉजिकल सेमिनरी, 1976), 5–8. [13]अपने भाषणों के दौरान अय्यूब ने अपनी खराई को बनाए रखा (27:5; 31:6)। [14]जे. वाश वाट्स, *ए सर्वे ऑफ़ ओल्ड टैस्टामैंट टीचिंग* (नैशविल: ब्रॉडमैन प्रैस, 1947), 1:230. [15]देखे रॉबर्ट गोर्डिस, *द बुक ऑफ़ गॉड ऐंड मैन: अ स्टडी ऑफ़ अय्यूब* (शिकागो: द यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 1965), 77, जहां एलीपज कर वर्णन सबसे गरिमापूर्ण और सबसे गंभीर मन का व्यक्ति के रूप में किया गया है; और ए. बी. डेविडसन और एच. सी. ओ. लैंचेस्टर, द *बुफ ऑफ़ अय्यूब विद नोट्स, इंट्रोडक्शन ऐंड अपैंडिक्स*, द कैम्ब्रिज बाइबल फॉर स्कूल्स ऐंड कॉलेजस (कैम्ब्रिज: यूनिवर्सिटी प्रैस, 1918), 30, जहां एलीपज को सबसे गरिमापूर्ण, सबसे शांत और मित्रों में सबसे अधिक विचारवान दिखाया गया है। [16]एडगर जोन्स, *द ट्रायम्फ ऑफ़ अय्यूब* (लंदन: एससीएम प्रैस, लिमिटेड, 1966), 36. [17]सेमुएल कॉक्स, *ए कॉमैंट्री ऑन द बुक ऑफ़ अय्यूब*, 2रा संस्क. (लंदन: केगन पॉल, ट्रेंच ऐंड कंपनी, 1885), 76. [18]जेम्स स्ट्राहन, *द बुक ऑफ़ अय्यूब* (एडिनबर्ग: टी. ऐंड टी. क्लार्क, 1913), 88. [19]सेमुएल रोलस ड्राइवर ऐंड जॉर्ज बुचनन ग्रे, *ए क्रिटिकल ऐंड एक्सेजेटिकल कॉमैंट्री ऑन द बुक ऑफ़ अय्यूब* (एडिनबर्ग: टी. ऐंड टी. क्लार्क, 1921), 78. [20]*द इंटरप्रेटर'स बाइबल*, सम्पा. जॉर्ज आर्थर बट्रिक (नैशविल: एबिंगडन प्रैस, 1954), 3:973 में सेमुएल टेरियन, ''द बुक ऑफ़ अय्यूब: इंट्रोडक्शन ऐंड एक्सेजेसिस।''

[21]स्ट्राहन, 110. [22]जॉन्स, 58; और एच. एच. रोअले, *अय्यूब*, द सेंचुरी बाइबल, न्यू सीरीज़ (ग्रीनवुड, साउथ: अटिक प्रैस, Inc., 1970), 105. [23]टी. एच. रोबिन्सन, *अय्यूब ऐंड हिज़ फ्रेंड्स* (लंदन: एससीएम प्रैस लिमिटेड, 1954), 62. [24]देखें हैरिसन, 1034–35. [25]आर्चर, 435–36; क्लाइड टी. फ्रांसिस्को, इंट्रोड्यूसिंग द ओल्ड टैस्टामैंट (नैशविल: ब्रॉडमैन प्रैस, 1950), 197; और एच. एच. रोअले, *फ्रॉम मोसस टू कुमरान, स्टडीज़ इन द ओल्ड टैस्टामैंट* (लंदन: लुटरवर्थ प्रैस, 1963), 148, एन. 1. [26]शैकलफोर्ड, 79–88. [27]टेरिएन, 3:1169.

रूपरेखा

I. भूमिका (1:1–2:13)

क. अय्यूब पर दु:खों का घेरा (1:1–22)

1. अय्यूब और उसकी पृष्ठभूमि का विवरण (1:1–5)
2. शैतान को अय्यूब को परखने की अनुमति दी गई (1:6–12)
3. अय्यूब पर दु:खों का घेरा (1:13–19)
4. दु:खों पर अय्यूब की प्रतिक्रिया (1:20–22)

ख. अय्यूब का अत्यधिक कष्ट और उसके तीन मित्र (2:1–13)

1. हर व्यक्ति की अपनी कीमत है (2:1–6)
2. अय्यूब का अत्यधिक कष्ट (2:7, 8)
3. अय्यूब की पत्नी की प्रतिक्रिया (2:9, 10)
4. अय्यूब के मित्र (2:11–13)

II. अय्यूब का विलाप (3:1–26)

क. ''मैं जन्मा ही क्यों?'' (3:1–10)

ख. ''पेट से निकलते ही मेरा प्राण क्यों न छूटा?'' (3:11–19)

ग. ''मुझे दु:ख क्यों सहने पड़ रहे हैं?'' (3:20–26)

III. अय्यूब और उसके तीन मित्र: भाषणों का पहला दौर (4:1–14:22)

क. एलीपज का पहला भाषण (4:1–5:27)

1. अय्यूब के जीवन के पुराने ढंग को याद दिलाया गया (4:1–6)
2. ''क्या कोई निर्दोष भी कभी नष्ट हुआ है?'' (4:7–11)
3. एलीपज के ज्ञान का स्रोत (4:12–21)
4. बुराई करने वाले दु:ख की कटनी काटते हैं (5:1–7)
5. परमेश्वर के सामने अपना मुकदमा रखना (5:8–16)
6. ''धन्य है वह मनुष्य जिसको परमेश्वर ताड़ना देता है'' (5:17–27)

ख. अय्यूब का उत्तर (6:1–7:21)

1. ''मेरा दु:ख समुद्र की रेत से भी भारी है'' (6:1–7)
2. ''मैंने उस पवित्र के वचनों का कभी इनकार नहीं किया'' (6:8–13)
3. विश्वासघाती भाई (6:14–23)
4. ''मुझे बताओ कि मैंने किस बात में चूक की है'' (6:24–30)
5. जीवन का उबाऊ होना (7:1–6)
6. जीवन का छोटा होना (7:7–10)
7. जीवन की कड़वाहट (7:11–21)

ग. बिलदद का पहला भाषण (8:1–22)

1. ''क्या परमेश्वर अन्याय करता है?'' (8:1–7)
2. बिलदद के ज्ञान का स्रोत (8:8–10)
3. परमेश्वर का उसे बिसराने वालों को दण्ड (8:11–22)

घ. अय्यूब का उत्तर (9:1–10:22)

1. ''क्या मनुष्य परमेश्वर से सवाल कर सकता है?'' (9:1–12)
2. परमेश्वर की सामर्थ और अनुपलब्धता (9:13–24)
3. ''हमारे बीच कोई मध्यस्थ नहीं है'' (9:25–35)
4. ''मेरा प्राण जीवित रहने से उकताता है'' (10:1–7)
5. ''मुझे परमेश्वर के हाथों ने सृजा है'' (10:8–17)
6. ''हे परमेश्वर मुझे अकेला छोड़ दे'' (10:18–22)

ङ. सोपर का पहला भाषण (11:1–20)

1. अय्यूब को उसके अहंकार के लिए डांट लगाई (11:1–6)
2. अगम्य परमेश्वर (11:7–12)
3. अय्यूब से पश्चात्ताप करने को कहा गया (11:13–20)

च. अय्यूब का उत्तर (12:1–14:22)

1. अय्यूब पर आरोप लगाने वालों को डांट (12:1–12)
   - क. ''मेरे मित्र मुझ पर हंसते हैं'' (12:1–6)
   - ख. सृष्टि में परमेश्वर का ज्ञान और सामर्थ दिखाई देती है (12:7–12)
2. परमेश्वर की सामर्थ प्रकट की गई (12:13–25)
3. अय्यूब का ज्ञान कुछ कम नहीं है (13:1, 2)
4. ''तुम लोग निकम्मे वैद्य हो'' (13:3–12)
5. सफ़ाई में अय्यूब का भरोसा (13:13–19)
6. अपने पापों को जानने की अय्यूब की मांग (13:20–28)
7. मनुष्य का थोड़ी देर का दु:खों से भरा जीवन (14:1–6)
8. मनुष्य की तुलना वृक्ष से की गई (14:7–12)
9. ''क्या मृत्यु में शांति है?'' (14:13–17)
10. अय्यूब का उदासी भरा निष्कर्ष (14:18–22)

IV. अय्यूब के तीन मित्र: भाषणों का दूसरा दौर (15:1–21:34)

क. एलीपज का दूसरा भाषण (15:1–35)

1. अय्यूब के दोष का उसके भाषण से पता चला (15:1–6)
2. अय्यूब पर सब कुछ जानने वाला होने का आरोप लगा (15:7–16)
3. दुष्टों की दुर्दशा का बुद्धिमानों द्वारा वर्णन (15:17–35)

ख. अय्यूब का उत्तर (16:1–17:16)

1. ''तुम सब के सब निकम्मे शांतिदाता हो'' (16:1–5)

2. ''परमेश्वर मेरा बैरी बन गया है'' (16:6-17)
3. ''स्वर्ग में मेरा साक्षी है'' (16:18-22)
4. ''मेरे लिए कब्र तैयार है'' (17:1, 2)
5. ''मेरा ज़ामिन कौन है?'' (17:3-5)
6. ''परमेश्वर ने मुझे घृणा का पात्र बना दिया है'' (17:6-16)

ग. बिलदद का दूसरा भाषण (18:1-21)
1. अय्यूब से न्यायसंगत होने की अपील (18:1-4)
2. दुष्टों का एक विवरण (18:5-21)
क. ''दुष्ट व्यक्ति का दीपक बुझ जाएगा'' (18:5, 6)
ख. ''दुष्ट व्यक्ति के पांव जाल में फंस जाएंगे'' (18:7-11)
ग. ''दुष्ट व्यक्ति का स्वास्थ्य जाता रहेगा'' (18:12, 13)
घ. ''दुष्ट व्यक्ति का निवास छिन जाएगा'' (18:14, 15)
ङ ''दुष्ट व्यक्ति को भुला दिया जाएगा'' (18:16-19)
च. ''दुष्ट व्यक्ति को परमेश्वर का ज्ञान नहीं है'' (18:20, 21)

घ. अय्यूब का उत्तर (19:1-29)
1. ''तुम कब तक ऐसी बातों से मुझे सताते रहोगे?'' (19:1-6)
2. ''परमेश्वर ने मुझे अपमानित किया है'' (19:7-12)
3. ''मित्र और मेरी जान पहचान वाले मुझ से घृणा करते हैं'' (19:13-22)
4. ''मैं अपने छुड़ाने वाले पर भरोसा रखूंगा'' (19:23-29)

ङ सोपर का दूसरा भाषण (20:1-29)
1. ''दुष्ट की विजय थोड़ी देर की है'' (20:1-11)
2. ''बुराई मीठी पर ज़हरीली है'' (20:12-19)
3. ''दुष्टों को परमेश्वर की ओर से उसका भाग मिलेगा?'' (20:20-29)

च. अय्यूब का उत्तर (21:1-34)
1. ''तुम सुन नहीं रहे हो!'' (21:1-6)
2. ''दुष्ट लोग सफल होते है'' (21:7-16)
3. ''आम तौर पर दुष्टों को दण्ड नहीं मिलता है'' (21:17-26)
4. ''तुम्हारे उत्तर गलत हैं'' (21:27-34)

V. अय्यूब, एलीपज और बिलदद: भाषणों का तीसरा दौर (22:1-27:23)

क. एलीपज का तीसरा भाषण (22:1-30)
1. ''हे अय्यूब, तेरी बुराई बड़ी है'' (22:1-11)
2. ''मनुष्य के मार्ग परमेश्वर से छिपे नहीं हैं'' (22:12-20)
3. ''परमेश्वर से मेल मिलाप कर ले तो तुझे चंगाई मिलेगी'' (22:21-30)

ख. अय्यूब का उत्तर (23:1-24:25)
1. ''काश मैं अपना मुकदमा परमेश्वर के सामने लड़ पाता'' (23:1-7)

2. ''परमेश्वर मुझे जानता है, पर मैं उसे देख नहीं सकता'' (23:8-17)
3. ''लगता है कि परमेश्वर गलतियों को नज़रअंदाज़ कर देता है'' (24:1-12)
4. ''अंधेरा बुराइयों को छुपा लेता है'' (24:13-17)
5. ''दुष्ट लोग वृक्ष की तरह तोड़ दिए जाएंगे'' (24:18-25)

ग. बिलदद का तीसरा भाषण: ''क्या मनुष्य परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी ठहर सकता है'' (25:1-6)

घ. अय्यूब का उत्तर (26:1-27:23)
1. ''तुम ने बिना समझ के सलाह दी है'' (26:1-4)
2. ''परमेश्वर समझ से परे महान है'' (26:5-14)
3. अय्यूब की खराई की पुष्टि हुई (27:1-6)
4. भक्तिहीनों की दुर्दशा (27:7-23)
   क. दुष्ट व्यक्ति के लिए कोई आशा नहीं (27:7-12)
   ख. दुष्ट व्यक्ति का भाग (27:13-23)

VI. अय्यूब के अंतिम भाषण (28:1-31:40)

क. बुद्धि का तरीका (28:1-28)
1. ''मनुष्य छुपे हुए खजाने ढूंढ़ लेता है'' (28:1-11)
2. ''मनुष्य बुद्धि को नहीं ढूंढ़ सकता'' (28:12-22)
3. ''परमेश्वर बुद्धि देता है'' (28:23-28)

ख. अय्यूब का ''अच्छे पुराने दिनों'' को तरसना (29:1-25)
1. अय्यूब की समृद्धि, जब परमेश्वर निकट था (29:1-6)
2. अय्यूब की पुरानी आदर वाली स्थिति (29:7-11)
3. दूसरों के लिए अय्यूब की यथार्थ चिंता (29:12-17)
4. अय्यूब का विश्वास कि वह शान से मरेगा (29:18-20)
5. अय्यूब की सलाह मांगी जाती थी (29:21-25)

ग. अय्यूब की वर्तमान दयनीय स्थिति (30:1-31)
1. ''उम्र में मुझ से कम अब मुझ पर हंसते हैं'' (30:1-8)
2. ''वे मुझ पर ताने मारते हैं'' (30:9-15)
3. ''शोक ने मुझे घेर लिया'' (30:16-23)
4. ''मैं शोक का पहरावा पहन हुए हूं'' (30:24-31)

घ. अय्यूब के नैतिक जीवन का दावा किया गया (31:1-40)
1. अपनी आंखों के साथ अय्यूब की वाचा (31:1-4)
2. अय्यूब की खराई (31:5-8)
3. अय्यूब की वैवाहिक विश्वसनीयता (31:9-12)
4. दासों के साथ अय्यूब का व्यवहार (31:13-15)
5. कंगालों के लिए अय्यूब का परोपकार (31:16-23)

6. अय्यूब की सम्पत्ति या मूर्तियों के बजाय परमेश्वर पर निर्भरता (31:24-28)
7. लोगों के साथ अय्यूब के नैतिक सम्बन्ध (31:29-37)
8. अय्यूब का भूमि-प्रबंधन (31:38-40)

VII. लीहू: बातों से भरा क्रुद्ध युवा (32:1-37:24)

क. एलीहू के बोलने की आवश्यकता (32:1-22)
1. एलीहू का अपने मित्रों पर क्रोध (32:1-5)
2. एलीहू की पहले बोलने से हिचकिचाहट (32:6-10)
3. एलीहू का ध्यान से सुनना (32:11-14)
4. एलीहू का राहत पाने का तरीका (32:15-21)

ख. परमेश्वर के बारे में एलीहू के विचार (33:1-34:37)
1. एलीहू की खरी बातें (33:1-7)
2. परमेश्वर के विरुद्ध अय्यूब के आरोपों का दोहराया जाना (33:8-12)
3. ''परमेश्वर स्वप्नों और दर्शनों के माध्यम से बात करता है'' (33:13-18)
4. ''परमेश्वर ताड़ना के द्वारा बात करता है'' (33:19-22)
5. ''परमेश्वर किसी दूत के द्वारा बात कर सकता है'' (33:23-28)
6. ''कई बार परमेश्वर यह सब करता है'' (33:29-33)
7. ''जो सही है वह चुनो'' (34:1-9)
8. ''परमेश्वर दुष्टता का काम नहीं करता'' (34:10-15)
9. ''परमेश्वर निष्पक्ष है'' (34:16-20)
10. ''परमेश्वर अंतरयामी है'' (34:21-30)
11. ''अय्यूब अपने पाप में विद्रोह को जोड़ देता है'' (34:31-37)

ग. एलीहू द्वारा परमेश्वर की खामोशी का कारण बताया जाना (35:1-16)
1. ''अय्यूब की बातें ढिठाई की हैं'' (35:1-8)
2. ''परमेश्वर मनुष्य के घमण्ड के कारण उत्तर नहीं देता'' (35:9-16)

घ. अय्यूब से एलीहू की अपील (36:1-37:24)
1. एलीहू परमेश्वर की ओर से बात करता है (36:1-15)
2. अय्यूब से परमेश्वर के सामने झुक जाने की अपील (36:16-23)
3. परमेश्वर के काम को समझने की अपील (36:24-33)
4. ''आकाशमण्डल परमेश्वर की महिमा की घोषणा करता है'' (37:1-13)
5. अय्यूब से निजी अपील (37:14-20)
6. परमेश्वर की अद्‌भुत महिमा (37:21-24)

VIII. बवंडर के बीच में से अय्यूब को परमेश्वर का उत्तर (38:1-41:34)

क. परमेश्वर का पहला संदेश (38:1-40:2)
1. ''क्या तू मुझे समझा सकता है ?'' (38:1-3)

2. पृथ्वी की नींव रखे जाना (38:4–7)
3. समुद्र की बाड़ लगाए जाना (38:8–11)
4. भोर का पौ फटना (38:12–15)
5. समुद्र के सोते (38:16–18)
6. उजियाले और अंधेरे का निवासस्थान (38:19–21)
7. हिम और ओलों के भण्डार (38:22–24)
8. प्रकृति का ईश्वरीय नियन्त्रण (38:25–30)
9. आकाशमण्डल का ईश्वरीय नियन्त्रण (38:31–33)
10. बादलों का ईश्वरीय नियन्त्रण (38:34–38)
11. वन्य जीवन के लिए उसका प्रबन्ध (38:39–41)
12. प्रकृति और जीव जंतुओं का उसका प्रबन्ध (39:1–30)
    - क. पहाड़ी बकरियां (39:1–4)
    - ख. जंगली गधा (39:5–8)
    - ग. जंगली सांड (39:9–12)
    - घ. शुतरमुर्गी (39:13–18)
    - ङ. घोड़ा (39:19–25)
    - च. बाज और उकाब (39:26–30)
13. सारांश: मुद्दे की बात (40:1, 2)

ख. अय्यूब का उत्तर (40:3–5)

ग. परमेश्वर का दूसरा संदेश (40:6–41:34)

1. "क्या तू मेरा न्याय व्यर्थ ठहराएगा?" (40:6–9)
2. अय्यूब को न्यायी की भूमिका लेने की चुनौती दी गई (40:10–14)
3. जलगज पर विचार (40:15–24)
4. लिव्यातान पर विचार (41:1–34)
    - घ. अय्यूब को लिव्यातान को पकड़ने की चुनौती दी गई (41:1–11)
    - ङ. लिव्यातान का एक विवरण (41:12–34)
        - (1) लिव्यातान का कवच (41:12–17)
        - (2) लिव्यातान की आग (41:18–24)
        - (3) लिव्यातान की निडरता (41:25–34)

IX. उपसंहार (42:1–17)

क. अय्यूब का अंगीकार (42:1–6)

ख. तीनों मित्रों को परमेश्वर की डांट (42:7–9)

ग. परमेश्वर का अय्यूब के जीवन को फिर से खुशहाल करना और अय्यूब को बच्चों की आशीष देना (42:10–17)